कैमरा बना गवाह

दीपांजली काकाती

अमेरिकी फोटोग्राफर टैसी बर्कली ने अपनी तस्वीरों के जरिये आर्थिक और सामाजिक बराबरी के लिए रोजमर्रा संघर्ष करने वाली भारतीय महिलाओं की जिंदगी में झांकने का प्रयास किया

हेमंत भटनागर

सारी दुनिया में महिलाएं हर दिन अपना जीवन बेहतर बनाने की चुनौती से जूझती हैं। अक्टूबर 2005 से मार्च 2006 के बीच अपने प्रोजेक्ट 'आर्थिक न्याय के लिए महिलाओं द्वारा महिलाओं की मदद' पर काम करने भारत आई अमेरिकी फोटोग्राफर टैसी बर्कली ने भारतीय महिलाओं के दैनिक संघर्ष की तस्वीरें उतारीं। वह कहती हैं, ''नौ करोड़ कामकाजी महिलाओं वाले देश भारत में कुछ तो अद्भुत और प्रेरक है। इनमें से ज्यादातर महिलाएं अनियोजित क्षेत्रों में कार्यरत हैं और अक्सर महज कुछ रुपयों के लिए काम करती हैं। लेकिन वे सदियों से चली आ रही परंपराओं को चुनौती दने को तत्पर हैं।'' बर्कली फुलब्राइट स्कॉलरशिप के तहत भारत आई थीं। अमेरिका और दूसरे देशों के बीच शिक्षकों, छात्रों, कलाकारों और शोधकर्ताओं के पारस्परिक आदान-प्रदान के अंतर्गत यह शोधवृत्ति दी जाती है।

बर्कली द्वारा खींची गई कुछ तस्वीरों को फरवरी में नई दिल्ली स्थित इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में प्रदर्शित किया गया। खेतों में, निर्माण स्थलों पर काम करती और एक छोटी-सी रसोई से खाने का कारोबार चलाती महिलाओं की ये तस्वीरें बेहद मर्मस्पर्शी हैं। इनसे उन महिलाओं का जीवट तथा स्त्रियों की भावी पीढ़ियों के लिए बेहतर जीवन की तलाश का संघर्ष झलकता है। भारत में बर्कली ने महिला अधिकारों के लिए काम कर रहे तीन संगठनों के साथ काम किया। पुणे में उन्होंने लीला पूनावाला फाउंडेशन के साथ काम किया जो गरीब महिलाओं को काम के अवसर तथा शोधवृत्ति मुहैया कराती है। नई दिल्ली में उन्होंने वयस्कों और बच्चों की साक्षरता और स्वास्थ्य सेवाओं के लिए काम कर रहे स्लम्स ऑफ दिल्ली प्रोजेक्ट के साथ काम किया। अहमदाबाद में उन्हें सेवा बैंक के साथ काम करने का मौका मिला जो सेल्फ एंप्लॉयड वीमेन्स एसोसिएशन का अंग है। यह बैंक पूरी तरह से गरीब महिलाओं के स्वामित्व वाला है और इसे वे महिलाएं ही चलाती हैं। छोटी बचतों के मामले में सेवा बैंक को विशेषज्ञता हासिल है। बर्कली बताती हैं, ''भारत में मैंने अपना काम गैर सरकारी संगठनों की मदद से पूरा किया।'' उन्हें लगता है कि ऐसे सहयोग के बिना ये फोटो खींचना बेहद मुश्किल हो सकता था।

इन महिलाओं के साथ वक्त बिताने से बर्कले को उनकी स्थितियों का आकलन करने में सहूलियत हुई। अहमदाबाद के नजदीक एक गांव में निर्माण स्थल पर कामगार मजदूरों के फोटो लेने के बारे में वह बताती हैं, ''सेवा ने जिन 98 प्रतिशत कामगार महिलाओं को अपने साथ जोड़ा है, वे अकुशल मजदूर हैं। इनमें से 90 फीसदी बमुश्किल अपनी दिहाड़ी कमा पाती हैं और उन्हें इसके अलावा कोई अन्य लाभ नहीं मिलता। मैं उनकी कोई मदद नहीं कर सकती, पर उनके मुश्किल आर्थिक हालात का अनुमान लगा सकती हूं। कोई एक दुर्घटना या बीमारी उनमें से ज्यादातर महिलाओं और उनके परिवारों को बेहद मुश्किल स्थितियों में धकेल सकती है।''

इसके बावजूद बर्कली ने उन महिलाओं में विपरीत हालात से बाहर निकलने का जज्बा देखा। उनके प्रोजेक्ट से यह तथ्य उद्घाटित होता दिखाई देता है कि सदियों के भेदभावपूर्ण रवैए के बाद आज की भारतीय महिलाएं सामाजिक और आर्थिक समानता हासिल करने के लिए संघर्ष कर रही हैं और इस संघर्ष में वे एक-दूसरे की मदद कर रही हैं। बर्कली कुछ ऐसी महिलाओं से मिलीं जो अपने परिवारों की आय का इकलौता स्रोत हैं और वे यह जिम्मेदारी गौरव व सम्मान के साथ उठा रही हैं। बर्कली कहती हैं, ''जिन महिलाओं का मैंने साक्षात्कार लिया और फोटोग्राफी के दौरान जिनके साथ कुछ घंटे बिताए, उनसे मिले अनुभव के आधार पर मैं इस नतीजे पर पहुंची हूं कि ये महिलाएं असल योद्धा हैं। बाधाओं के बावजूद उनमें चलते रहने का आश्चर्यजनक माद्दा है।'' जब उन्होंने महिलाओं से उस प्रेरणा के बारे में पूछा जो उन्हें सतत संघर्ष के लिए प्रेरित करती है, तो सबसे आम जवाब था: 'मेरे बच्चे'। बर्कली कहती हैं कि दो बेटों की इकलौती अभिभावक होने के कारण उन्हें महिलाओं के आर्थिक संकटों को समझने में आसानी होती है।

भारत में किए काम के आधार पर

ऊपर: 24 वर्षीय किरणबेन अहमदाबाद में नदी किनारे बनी झुग्गी से अपना खाने-पीने के सामान का कारोबार चलाती हैं। वह परिवार में अकेली कमाने वाली हैं।
बाएं: नई दिल्ली में अपनी फोटोग्राफ प्रदर्शनी के दौरान टैसी बर्कली।
दाएं: उम्र के चौथे दशक में प्रवेश कर चुकी अहमदाबाद के एक गांव की खेत-मजदूरिन पार्वतीबेन के हाथों की झुर्रियां बहुत कुछ कहती हैं।

बर्कली ने अपने चित्रों का एक संग्रह तैयार किया है। उन्हें उम्मीद है कि वह इन चित्रों को तमाम देशों में प्रदर्शित कर पाएंगी। इस संग्रह में 50 चित्र हैं। विषय से संबंधित उद्धरण उनसे जुड़े संदर्भों को स्पष्ट करते हैं। बर्कली भारत में हासिल अपने अनुभवों और फोटोग्राफ के आधार पर एक किताब की संभावना भी तलाश रही हैं। वह कहती हैं, ''इस बार मैं एक डिजाइनर और प्रकाशक से मिल चुकी हूं और इस विचार को अमल में लाने के लिए सामग्री जुटा रही हूं।''

बर्कली की भारत में दिलचस्पी की शुरुआत वर्ष 2001 में हुई जब वह मैरीलैंड स्थित जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी में ग्रेजुएट छात्रा थीं। उनके सलाहकार ने उन्हें भारत जाने और महिलाओं द्वारा महिलाओं को जीवन के तरीके चुनने में मदद करने के विषय पर और काम करने की सलाह दी थी। मार्च 2003 में जब मैरीलैंड के द हॉल्टन-आर्म्स स्कूल ऑफ बेथेस्डा ने उन्हें स्कूल की प्रदर्शनी के लिए फोटो खींचने और छात्रों को भारत के बारे में पढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम तैयार करने के मकसद से भारत भेजा तो उनके इस विचार ने ठोस आकार लेना शुरू कर दिया था। इस संस्थान में वह फोटोग्राफी विषय पढ़ाती हैं। भारत संबंधी अपने प्रोजेक्ट के बारे में वह कहती हैं, ''यह एक ऐसा अवसर था, जिसने मुझे एक कलाकार और एक व्यक्ति के तौर पर और विकसित होने का मौका दिया।'' वैसे, आत्म-विकास की उनकी यात्रा 1980 के दशक के मध्य में तब शुरू हुई थी जब उन्होंने अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की नौकरी छोड़कर फोटोग्राफी में अपने कॅरिअर का आरंभ किया था। बर्कली के फोटोग्राफी के कॅरिअर की शुरुआत वॉशिंगटन डी.सी. स्थित कॉरकॉरैन कॉलेज ऑफ आर्ट

फोटोग्राफ: टैसी बर्कली

एंड डिजाइन में एक छात्रा के रूप में उस समय हुई जब उन्होंने पांच साल की जन्म से दृष्टिहीन लड़की का अध्ययन शुरू किया। इस बारे में 1986 में *वॉशिंगटनॉयिन* पत्रिका में उनका एक फोटो-निबंध छपा और इसके 10 साल बाद उन्होंने इसी से जुड़ी एक अन्य रिपोर्ट लिखी। वह कहती हैं, ''कॅरिअर की शुरुआत में उस लड़की पर किए अध्ययन से मुझे यह सबक मिला कि हम जिनके लिए दुखी होते हैं, जरूरी नहीं है कि वे अपनी हालत पर दुखी होते हों।''

बर्कले के पास यूनिवर्सिटी ऑफ डेलावर से फोटोग्राफी में मास्टर ऑफ फाइन आर्ट्स की डिग्री के अलावा जॉन्स हॉपकिंस यूनिवर्सिटी से मास्टर ऑफ आर्ट्स इन राइटिंग की डिग्री है। उन्होंने वॉशिंगटन पोस्ट, द वॉशिंगटन, द न्यू रिपब्लिक, द नेशनल ज्योग्राफिक सोसायटी, किपलिंगर्स मैगजीन, टाइम-लाइफ बुक्स और द विल्डरनेस सोसायटी के लिए काम किया है। मैरीलैंड में एकल प्रदर्शनी लगाने के अलावा बर्कली ने वॉशिंगटन डी.सी., डेलावर और बेथेस्डा में समूह प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया है। □